"चालुक्य साम्राज्य – सामाजिक / प्रशासनिक / धार्मिक सांस्कृतिक एवं कला - स्थापत्य की अवस्था"

BA-SEM-II Paper - CC-3

दक्षिणपथ मौर्य साम्राज्य के अंतर्गत था। जब मौर्य सम्राटों की शक्ति शिथिल हुई और भारत में अनेक प्रदेश उनकी अधीनता से मुक्त होकर स्वतंत्र होने लगे तो दक्षिणापथ में सातवाहन वंश ने अपने एक पृथक राज्य की स्थापना की। शकों के साथ निरंतर संघर्ष के कारण जब इस राजवंश की शक्ति क्षीण हुई तो दक्षिणापथ में अनेक नये राजवंशों का उदय हुआ, जिनमें वाकाटक, कदंब और पल्लव के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन्हीं वंशों में से वातापी या बादामी का चालुक्य वंश और कल्याणी का चालुक्य वंश भी एक था। संभवतः इस वंश का प्रथम शासक पुलकेशी प्रथम था, जिसने 550 – 566 ई० तक शासन किया। इस वंश का सबसे महान शासक पुलकेशिन II था, जिसने 609 ई० से 643 ई० तक शासन किया।

चालुक्य साम्राज्य की सामाजिक / प्रशासनिक एवं सांस्कृतिक अवस्था

चालुक्यों ने लगभग दो शताब्दियों तक दक्षिणापथ पर शासन किया। वे धर्मनिष्ठ हिंदू थे और उन्होंने धर्मशास्त्रों के अनुसार शासन किया।

समूचे प्रशासनतंत्र का केंद्र बिंदु सम्राट होता था। इस वंश के सम्राट परमेश्वर, महाराजाधिराज जैसी विशाल उपाधियां धारण करते थे।

राजपद आनुवंशिक होता था। चालुक्य लेखों में किसी मंत्रिपरिषद् का उल्लेख नहीं मिलता। प्रशासन में राजपरिवार के सदस्य ही मुख्यतः शामिल थे।

राजा के आदेश प्रायः मौखिक होते थे जिन्हें सचिव लिपिबद्ध कर संबंधित अधिकारियों या व्यक्तियों के पास भेज देते थे।

चालुक्य शासकों ने विजित प्रांतों में अधीन सामंतों को शासन करने का अधिकार दिया था। सामंत अपने-अपने क्षेत्रों में स्वतंत्रतापूर्वक शासन करते थे। कुछ नगर विशेष महत्व के थे। बड़े नगरों में तीन सभी-सभी

Scanned with CamScanner

सभायें होती थी, जिनमें से प्रत्येक को 'महाजन' कहा जाता था।

ग्राम शासन की सबसे छोटी इकाई थी। कुछ लेखों में ग्राम के अधिकारी को 'गामुंड' कहा गया है। उसकी नियुक्ति केंद्र द्वारा होती थी।

लेखों से तत्कालीन कर प्रणाली का भी संकेत मिलता है। पुलकेशिन द्वितीय के हैदराबाद दानपत्र में निधि, उपनिधि तथा उपरिकर (अधिभार) का उल्लेख मिलता है। 'दंडाय' जुर्माने के रूप में प्राप्त होने वाली आय को कहते थे। चालुक्य नरेश उदार प्रशासक थे तथा उन्होंने विभिन्न नगरों को दान दिये।

चालुक्य साम्राज्य में धर्म – चालुक्य ब्राह्मण धर्मानुयायी थे तथा उनके कुल देवता विष्णु थे। इसके अतिरिक्त चालुक्य शिव की पूजा भी करते थे। चालुक्य शासकों के अधिकांश लेख विष्णु के वाराह अवतार की आराधना से प्रारंभ होते हैं। चालुक्य साम्राज्य में वैदिक यज्ञों का भी अनुष्ठान होता था, तथा दान दिये जाते थे। चालुक्य शासक धार्मिक सहिष्णुता की नीति पर विश्वास करते थे। उन्होंने जैन साधुओं तथा शिक्षकों को दान दिया था। 'एहोल अभिलेख' का रचयिता रविकीर्ति एक जैन था, जिसे पुलकेशिन II ने संरक्षण प्रदान किया था।

चालुक्य राज्य में अनेक बौद्ध मठ तथा विहार थे जिनमें हीनयान तथा महायान दोनों ही संप्रदाय के भिक्षुक निवास करते थे।

विजयादित्य, विक्रमादित्य आदि चालुक्य राजाओं ने विद्वानों को पुरस्कृत किया।

चालुक्य साम्राज्य की कला और वास्तुकला

चालुक्य शासन में कला और स्थापत्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई। इस समय जैनों तथा बौद्धों के अनुकरण पर हिंदू देवताओं के लिए पर्वत-गुफाओं को काटकर मंदिर बनवाये गये। चालुक्य मंदिरों के उत्कृष्ट नमूने बादामी, ऐहोल तथा पत्तडकल से प्राप्त होते हैं।

बादामी में पाषाण को काटकर मंडप बनाये गये हैं, इनमें से तीन हिंदू धर्म से तथा एक जैन धर्म से संबंधित है।

एहोल को 'मंदिरों का नगर' कहा जाता था और यहां कम से कम 70 मंदिरों के अवशेष प्राप्त होते हैं। इसका निर्माण 450-600 ई० के बीच हुआ। इसी समय उत्तरी भारत में गुप्त मंदिरों का निर्माण हुआ तथा आर्य शिखर शैली (नागर शैली) का प्रभाव दक्षिण में पहुँचा। यही कारण है कि एहोल के मंदिरों में नागर तथा द्रविड़ शैलियों का मिश्रण मिलता है। अधिकांश मंदिर विष्णु तथा शिव के हैं। यहां के हिंदू गुहा मंदिरों में सबसे प्रसिद्ध सूर्य का मंदिर है। इसे अतिरिक्त चालुक्य काल में उत्तरी शैली में बना 'पापनाथ का मंदिर' तथा दक्षिणी शैली में बने 'विरूपाक्ष' तथा 'संगमेश्वर मंदिर' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। विख्यात कलाविद् पर्सी ब्राउन के शब्दों में 'विरूपाक्ष मंदिर प्राचीन काल की उन दुर्लभ संरचनाओं में से एक है जिनमें उन मनुष्यों की भावना अब भी बसी हुई है जिन्होंने इसकी कल्पना की तथा अपने हाथों से निर्मित किया।

चालुक्य साम्राज्य के दौरान साहित्य → चालुक्य शासकों के शासनकाल में साहित्य के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण प्रगति हुई। चालुक्य लेखों में संस्कृत भाषा का प्रयोग मिलता है। मधनूर तथा एहोल के अभिलेख क्रमशः गद्य एवं पद्य के विकसित होने के प्रमाण हैं। मधनूर लेख की तुलना बाणभट्ट के गद्य अभिलेख से और एहोल का प्रशस्तिकार कालिदास तथा भारवि के समकक्ष होने का दावा करता है।

इस काल के अन्य विद्वानों में पंडित उदयदेव तथा सोमदेव सूरि थे। उदयदेव जैन मतानुयायी तथा प्रसिद्ध व्याकरणाचार्य थे।

पुलकेशिन II के सामंत गंगराज ने 'शब्दावतार' नामक व्याकरण ग्रंथ की रचना की तथा किरातार्जुनीयम के 15वें सर्ग पर टीका लिखी।

चालुक्य शासक विजयादित्य के एक अभिलेख से पता चलता है कि चालुक्यों की राजधानी बादामी में चौदह (14) विद्याओं में पारंगत हजारों ब्राह्मण निवास करते थे, जो चालुक्यों को साहित्य के प्रति अनुराग को दर्शाता है।

page 7

Rajesh Kumar Singh (Asst. Prof. History, D.S.P.M.U.)

Scanned with CamScanner